* R E - 0 1 6 5 / 1 0 0 0 *

RE-0165

Second Year B. A. Examination

April / May – 2010

Hindi : Paper - I

Time : 3 Hours] [Total Marks :

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **S. Y. B. A.**

Name of the Subject :

☛ **Hindi : Paper - 1**

☛ Subject Code No. : **0 1 6 5** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं ।

१ 'महाप्रस्थान' के काव्यरूप की समीक्षा कीजिए ।

अथवा

१ 'महाप्रस्थान' काव्य के आधार पर द्रौपदी के चरित्र पर प्रकाश डालिए ।

२ 'कैसी विचित्र है जिन्दगी' कविता में वर्तमान जीवन की अव्यवस्था और खण्डित स्थितियों को बखूबी उभारा गया है – सिद्ध कीजिए ।

अथवा

२ 'कमासिन–टिमटिमाती लालटेन की तरह' कविता में ग्राम्य जीवन की दुर्दशा का चित्रण हुआ है – विधान को परखिए ।

३ भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि से महाप्रस्थान की समीक्षा कीजिए ।

अथवा

३ 'मैं लड़ाई लड़ रहा हूँ मोर्चे पर' कविता में सामाजिक विसंगतियों का वर्णन हुआ है – इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

४ टिप्पणियाँ लिखिए :

(क) 'महाप्रस्थान' में प्रतीकात्मकता ।

अथवा

(क) 'महाप्रस्थान' काव्य का संदेश ।

(ख) 'मोचीराम' कविता में निहित व्यंग्य ।

अथवा

(ख) 'टूटा पहिया' कविता का भावार्थ ।

५ ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :

(अ) सामनेवाला यदि आवेग में
पशु हो गया हो
तो विवेक के रहते
प्रतीक्षा करो
उसके पुनः मनुष्य होने की ।

अथवा

(अ) प्रकृति से बड़ा
कोई व्यक्ति नहीं होता,
कोई शस्त्र नहीं पार्थ !
जो प्रकृति के धर्म का भेदन कर सके ।
प्रकृति के धर्म का भेदन करना
परात्पर होना है
और वह शस्त्र से सम्भव नहीं ।

(आ) एक बीते के बराबर
यह हरा ठिंगना चना,
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का,
सजकर खड़ा है ।

अथवा

(आ) दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठीं घरभर की आंखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद ।

(इ) ''जितनी समझ तुम से अब तक पायी है कनु,
उतनी बटोरकर भी
कितना कुछ है जिसका
कोई भी अर्थ मुझे समझ नहीं आता है
अर्जुन की तरह कभी
मुझे भी समझा दो
सार्थकता है क्या बन्धु ''

अथवा

(इ) मेरी यह हिम–परीक्षा
तुम क्यों लेना चाहते हो ?
सीता की अग्नि–परीक्षा से
राम को ही क्या प्राप्त हुआ
जो तुम
अपनी कृष्ण की हिम–परीक्षा ले रहे हो ?